03

मित्रता

लेखक का नाम –'रामचंद्र शुक्ल'

रचनाकार का परिचय : आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य के उच्च कोटि के निबंधकार और समालोचक माने जाते हैं, जिन्होंने अपनी अमूल्य रचनाएँ हिंदी साहित्य को प्रदान की है।

ऐसे महान साहित्यकार का जन्म 4 अक्टूबर 1884 ई. में बस्ती नामक जिले के अगौना नामक ग्राम में हुआ और मृत्यु 2 फरवरी 1941 ई. को हुआ। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के पिताजी का नाम चंद्र. बली शुक्ल तथा माता जी का नाम विभाषी देवी था। ये हिन्दी साहित्य के आलोचक, निबन्धकार, साहित्येतिहासकार, कोशकार, अनुवादक, कथाकार और कवि हुए। इनके द्वारा लिखी गई सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है "हिन्दी साहित्य का इतिहास", जिसके द्वारा आज भी काल निर्धारण एवं पाठ्यक्रम निर्माण में सहायता ली जाती है।इनके निबंध संग्रह चिंतामणि और विचारवीथी के नाम से प्रकाशित हैं।

अधिगम प्रतिफल:

- विविध विधा से परिचय (इस पाठ में निबंध विधा) और अनुमान लगाते हैं। विश्लेषण करते हैं।
- किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसका कारण जानने की कोशिश करते हैं।

सार–संक्षेप

रामचंद्र शुक्ल जी ने इस विचार प्रधान निबंध के माध्यम से मित्रता के महत्व को बतलाया है। मित्रता के दोनों पहलुओं पर (अच्छे और बुरे) विचार किया गया है कि जब हमारी मित्रता अच्छी होती है तो हम कठिन से कठिन परिस्थितियों से भी निकल जाते हैं और ऊँचाइयों को छू लेते हैं, और जब हमारी मित्रता सही नहीं होती तो हम कठिन परिस्थितियों में फँसते चले जाते हैं, ऊंचाइयों पर पहुंच कर भी गिर जाते हैं, यद्यपि मित्रता मनुष्य जीवन की आवश्यकता है और एक साथ रहते–रहते हमारी मित्रता हो ही जाती है जो कि एक सहज मानवीय गुण है। एक अच्छा मित्र हमारा अच्छा पथ प्रदर्शक, सहयोगी और प्रेरणादायक होता है जबकि गलत मित्र राह भटकाने वाला, दुख के समय साथ नहीं देने वाला होता है। यह सत्य है कि यह विचार प्रधान निबंध प्रमाणित करता है कि 'संगत से गुण आत है, संगत से गुण जात' अर्थात संगति से ही हमें गुण मिलता है और संगति से ही हमारा गुण चला भी जाता है। अतएव मित्र का चुनाव करते समय हमेशा सतर्क रहना चाहिए क्योंकि संगति का प्रभाव हमारे ऊपर अवश्य पड़ता है।

© JCERT not to be republished

गद्यांश की व्याख्या–1

जब कोई युवा पुरुष घर से बाहर निकल कर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है––––––––––––––जिसे जो जिस रूप में चाहे उस रूप में ढाले–––चाहे राक्षस बनाए चाहे देवता। (पृष्ठ संख्या 13)

शब्दार्थ –

एकान्त – अकेला

निराली – अलग तरह का

उपयुक्त – अनुकुल

संस्कार – अच्छे गुण

अपरिमार्जित – जो साफ सुथरा न हो

प्रवृत्ति – झुकाव

व्याख्या –

इस गद्यांश में लेखक कहना चाहता है कि जब कोई भी युवक घर से बाहर अपने माता–पिता, सगे–संबंधियों के बिना संसार में प्रवेश करता है तब उसे सबसे अधिक कठिनाई मित्र के चुनाव में आती है। कुछ लोगों की पहचान की संख्या बहुत अधिक हो जाती है ऐसी स्थिति में, यह मेल मिलाप धीरे–धीरे मित्रता में बदल जाती है। मित्रों के चुनाव में हमारी जीवन की सफलता निर्भर करती है क्योंकि दूसरों के साथ रहते–रहते हम उनसे प्रभावित होने लगते हैं इसके साथ ही उनके आचार–विचार, रहन–सहन, व्यवहार सभी बातों का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ने लगता है।हमारा संस्कार दूसरों की बातों को जल्दी ग्रहण करने की होती है और यदि हमारी प्रकृति अपरिपक्व हो तो हम बिना सोचे–समझे, बिना विचार किए सामने वाले के विचारों और व्यवहारों को जल्दी ग्रहण करने लगते हैं इसका परिणाम अच्छा या बुरा दोनों हो सकता है अच्छी प्रवृति और प्रभाव हमें देवता के समान और बुरी प्रवृति और प्रभाव हमें दानव बना सकती है।

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों को भरें।

क. हेल–मेल बढ़ते–बढ़ते____________के रूप में परिणत हो जाता है।

© JCERT not to be republished

ख. संगति का ____________ हमारे आचरण पर बड़ा भारी पड़ता है।

ग. ____________की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (10–20 शब्दों) दें।

प्रश्न 2. बाहरी संसार में हमें सबसे अधिक कठिनाई किस बात की होती है?

प्रश्न 3. संगति का गुप्त प्रभाव कैसे पड़ता है?

प्रश्न 4. जीवन की सफलता किस पर निर्भर करती है?

गद्यांश की व्याख्या–2

ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है.......... विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। (पृष्ठ संख्या 13–14)।

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ –

संकल्प – प्रण करना

विवेक – भले बुरे का ज्ञान

परख – जाँच

अनुसंधान – खोज

आत्मशिक्षा – स्वयं की शिक्षा

सुगम – आसान

औषध – दवाई

व्याख्या –

संगति का प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है, यदि मित्र ऐसा मिल जाए अपनी बात मनवाने में दृढ़ संकल्पी हो और हम उसकी हर बातों को बिना सोचे समझे मानते चले जाएँ अथवा हमारा मित्र दुर्बल हो हमारी हर बात चाहे वह गलत ही क्यों ना हो विरोध ना करें यह दोनों ही स्थिति हमारे लिए खतरा उत्पन्न करती है इसलिए मित्र के चुनाव में हमें सावधान होकर विवेक से काम लेना चाहिए, उसके

गुण दोष को परख लेना चाहिए, किसी को मित्र बनाने से पहले उसके पूर्व के आचरण और स्वभाव को भी जानना चाहिए।

हँसमुख चेहरा बातचीत का ढंग थोड़ी चतुराई या साहस को देखकर हम किसी को मित्र बना लेते हैं किंतु हम या नहीं सोच पाते कि मित्रता का उद्देश्य क्या है?

मित्रता का क्या मूल्य है? मित्रता एक ऐसा साधन है जिससे आत्म शिक्षा का काम सरल हो जाता है एक विश्वासपात्र मित्र मिल जाए तो विपरीत परिस्थितियों में वह हमारी रक्षा करता है। विश्वासपात्र मित्र का मिलना ही मानो जीवन में कोई खजाना मिल गया हो वह हमारे जीवन में औषधि का काम करता है।

प्रश्न 5. रिक्त स्थानों को भरें—:

क. ________ मित्र से हम बड़ी भारी रक्षा रहती है।

ख. जीवन की एक ________ है।

ग. लोग एक घोड़ा लेते तो उसके सौ________ को परख लेते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (10 से 20 शब्दों) में दें—:

प्रश्न 6. मित्रों का चुनाव करते समय हमें किस बात का ध्यान रखना चाहिए?

प्रश्न 7. मित्रता का उद्देश्य क्या है?

गद्यांश की व्याख्या—3

अपने मित्रों ऐसा रखनी चाहिए कि ________ ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। (पृष्ठ संख्या 14)

शब्दार्थ —

आशा – उम्मीद

त्रुटियाँ – गलतियाँ

मर्यादा – मान

© JCERT not to be republished

बैद्य – चिकित्सक

प्रयत्न – कोशिश

व्याख्या –

एक अच्छा विश्वासपात्र मित्र हमें अच्छे संकल्पों के प्रति दृढ़ रखता है, हमारी त्रुटियों और दोषों से बचाता है, हमें सत्य, पवित्र और मर्यादा के स्नेह से परिपूर्ण रखता है, कुमार्ग पर जाने से रोकता है, हतोत्साहित मन में नवीन उत्साह का संचार करता है, निष्कर्ष यह कि सच्ची मित्रता में अच्छे वैद्य के समान निपुणता और परख तथा माता के समान धैर्यवान एवं कोमलता से भरी होती है।

प्रश्न 8. रिक्त स्थानों को भरें।

क. सच्ची मित्रता में____________की सी निपुणता और परख होती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें।

प्रश्न 9. हमें मित्रों से कैसी आशा रखनी चाहिए?

प्रश्न 10. सच्ची मित्रता किसके समान होती है?

गद्यांश की व्याख्या–4

छात्रावस्था मैं मित्रता की धुन सवार रहती है—————————————————इतनी बातें लगती है और कितनी जल्दी मानना होता है। (पृष्ठ संख्या 14)।

शब्दार्थ –

उमंग – उल्लास

खिन्नता – अप्रसन्नता

अनुरक्ति – लगाव, प्रेम

उद्गार – मन की भावना

© JCERT not to be republished

व्याख्या –

छात्र जीवन की मित्रता का भाव स्नेह–धागे से बंधा होता है। इस अवस्था में न ही अधिक उत्साह अथवा न ही अधिक रोष या खिन्नता का भाव होता है। बच्चों की मित्रता आनंद मग्न करने वाली, अपार विश्वास, मधुरता

और एक दूसरे के प्रति प्रेम से भरी होती है,जिसमें वर्तमान आनंद में डूबा हुआ एवं भविष्य नवीन कल्पना से भरी हुई होती है।जल्दी एक दूसरे से नाराज होना और मान भी जाना मित्रता का एक भाग होता है।

11. रिक्त स्थानों को भरें–:

क. _________ में मित्रता की धुन सवार रहती है।

ख. बाल मैत्री में जो _________करने वाला आनंद होता है वह और कहां?

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें–:

12. बाल मित्रता कैसी होती है?

गद्यांश की व्याख्या–5

सहपाठी की मित्रता इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल–पुथल का भाव भरा हुआ है _________सहानुभूति जिससे एक के हानि लाभ को दूसरा अपना हानि लाभ समझे। (पृष्ठ संख्या 14 –15)

शब्दार्थ –

कल्पित – कल्पना किया हुआ

स्वछन्द – स्वतंत्र

घृणा – नफरत घिन

प्रीति – स्नेह, सहानुभूति

© JCERT not to be republished

व्याख्या –

सहपाठी अर्थात् साथ में पढ़ने वाले। सहपाठी की मित्रता एक अलग प्रकार के भाव से भरी होती है। युवावस्था के (सहपाठी) मित्र बाल्यावस्था के मित्र (सहपाठी) से भिन्न होते हैं। युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़ शांत और गंभीर होती है जबकि बाल्यावस्था के मित्र इन सब बातों पर बिना ध्यान दिए मधुरता और अनुरक्ति से भरी होती है। युवावस्था में सुंदर प्रतिभा, मन को भाने वाली चाल–ढाल और स्वच्छंद विचारों की प्रकृति को देखकर आकर्षित होकर मित्रता की जाती है किंतु जीवन के संग्राम में मित्रों के गुण और भी होने चाहिए। वह हमारा सच्चा मित्र कभी नहीं हो सकता जिस मित्र के गुणों की हम केवल प्रशंसा करें, उसके प्रति हमारा ज्यादा स्नेह हो, जो हमसे छोटे– छोटे काम निकालते जाएँ, किंतु अंदर ही अंदर घृणा भाव रखें ऐसे मित्र हमारा सच्चा मित्र कभी नहीं हो सकता। सच्चा मित्र सही राह दिखाने वाला होता है, जिस पर पूर्णतः विश्वास कर सके, भाई के समान स्नेह भाव रखें, जहाँ एक के लाभ या हानि को अपना लाभ और हानि समझ एक दूसरे के प्रति सहानुभूति का भाव रखें।

प्रश्न 13. रिक्त स्थानों को भरें–:

क. __________ इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल–पुथल का भाव भरा हुआ है।

ख. युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से __________ और गंभीर होती है।

ग. ________भाई के समान होना चाहिए जिसे हम अपना प्रीति पात्र बना सकें

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें–:

प्रश्न 14. युवावस्था में किन दो चार बातें देखकर मित्रता की जाती है?

प्रश्न 15. मित्र को किसके समान होना चाहिए?

गद्यांश की व्याख्या–6

मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बताया गया है__________यह विश्वास कर सके कि उनसे किसी प्रकार धोखा न हो। (पृष्ठ संख्या 15)

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ –

कर्त्तव्य – करने योग्य

आत्मबल – आत्मा का बल

मृदुल – कोमल

सामर्थ्य – समर्थ होने का भाव

व्याख्या –

एक सच्चे मित्र का यह कर्तव्य है कि वह अपने मित्र के उच्च और महान कार्यों में सहायता प्रदान करें, मन के बल को बढ़ाएं, उसे निराशा से निकालकर उसकी सहायता इस प्रकार करें कि वह अपने सामर्थ्य से बाहर भी काम कर सकता है, यह वही मित्र कर सकता है जो स्वयं दृढ़–निश्चयी और सत्य संकल्पी हो, हमें ऐसे मित्र को ही तलाशना चाहिए और उन्हें जीवन भर नहीं छोड़ना चाहिए। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सुग्रीव ने श्री रामचंद्र को पकड़े रखा। जो शुद्ध मन से, मृदुल, पुरुषार्थी, श्रेष्ठ और सत्य निष्ठ हो, जिनके भरोसे हम अपने को छोड़ सकते हैं, जिन पर इतना विश्वास कर सके कि उनसे किसी प्रकार की धोखेबाजी नहीं मिलेगी।

प्रश्न 16. रिक्त स्थानों को भरें–:

क. हमें ऐसे मित्रों की खोज में रहना चाहिए जो हम से अधिक...............................हो।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें–:

प्रश्न 17. मित्र का कर्तव्य क्या होना चाहिए?

प्रश्न 18. कैसे मित्र पर विश्वास करना चाहिए?

गद्यांश की व्याख्या–7

जो बात ऊपर मित्रों के संबंध में कही गई है_____________जो उसे निरंतर उन्नति की ओर उठाती जाएगी। (पृष्ठ संख्या 16)

© JCERT not to be republished

शब्दार्थ –

कुसंग – खराब संगत, बुरी संगत

ज्वर – बुखार

क्षय – नाश

अवनति – गिरावट

बाहु – हाथ

निरंतर – हमेशा

व्याख्या –

मित्रों के समान ही जान पहचान वालों को भी हमारे जीवन को आनंदमय और उत्तम बनाने में साथ देना चाहिए। जो मित्र न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत करें, न अच्छी बातें बतलाए, न हमारे प्रति सहानुभूति रखें, न ढाँढस बँधा सके, न हमारे आनंद में शामिल हो और न हमारे कर्तव्य का बोध करा सके, ऐसे मित्र से हमें दूर रहना चाहिए। क्योंकि आजकल जान पहचान बनाना आसान है, आज आसानी से ऐसे युवा मित्र मिल जाते हैं जो साथ थिएटर देखने, नाच–रंग में जाने, सैर सपाटा करने, भोजन का निमंत्रण स्वीकार करने वाले हो किंतु ऐसे मित्रों से कोई लाभ नहीं, जब हानि होगी तो हमें बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ेगी क्योंकि कुसंगति का बुखार सबसे भयानक है यह केवल हमारे नीति–सिद्धांत का ही नाश नहीं करती बल्कि हमारी सद्बुद्धि का भी विनाश कर देती है। दिन–रात अवनति के मार्ग पर ले जाती है इसलिए अच्छी मित्रता हमें सहारा देने वाले हाथ के समान है जो निरंतर हमें उन्नति की ओर अग्रसर करती है।

19. रिक्त स्थानों को भरें:–

क. ___________सबसे भयानक होता है।

ख. मनुष्य का जीवन थोड़ा है उसमें___________ समय नहीं।

ग. ईश्वर हमें ऐसे मित्रों से दूर रखें जो हमें सहानुभूति द्वारा ___________न बँधा सके।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें–:

प्रश्न 20. कैसे मित्रों से दूर रहना चाहिए?

प्रश्न 21. कैसे मित्र हमें आसानी से मिल जाते हैं?

प्रश्न 22. कुसंगति का ज्वर कैसा होता है?

© JCERT not to be republished

गद्यांश की व्याख्या–8

इंग्लैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज दरबारियों में जगह नहीं मिली_________एक लीक काजल की लागि है पै लागि है।

शब्दार्थ –

फूहड़ – भद्दा

अश्लील – भद्दी, फूहड़

विवेक – भले–बुरे की पहचान

कुँठित – कुँद

उज्जवल – निर्मल

निष्कलंक – बेदाग, निर्दोष

व्याख्या –

कुसंगति या बुरे संगति के प्रभाव को बताते हुए लेखक कहता है कि घड़ी भर के साथ से भी हमारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, मन की पवित्रता का नाश होता है, हमारे मन के अंदर बुरे विचार जल्दी घर कर लेते हैं। जिस प्रकार भद्दे और फूहड़ गीत हमें जितनी जल्दी याद होते हैं इतनी जल्दी अच्छी और गंभीर बातें नहीं, लड़कपन में कहीं से बुरी कहावत यदि हमने सुना है तो लाख चेष्टा करने के बावजूद वह नहीं हटता है, जिन भावनाओं से हम दूर रहना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद नहीं करना चाहते हैं, वह हमें बार–बार याद रहता है। हमें पूरी चौकसी रखकर ऐसे साथी बनाना चाहिए जो अश्लील अपवित्र और फूहड़ बातें ना करें क्योंकि एक बार जब हमारा विवेक कुंठित हो जाए तो भले बुरे की पहचान नहीं रह जाती है। बुरी बात अच्छी लगने लगती है और हम इसके अभ्यस्त होते–होते उनमें ना जाने कब फँस कर रह जाते हैं पता ही नहीं चलता इसलिए ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए एक बार जब हमारा विवेक कुंठित हो जाए तो भले बुरे की पहचान नहीं रह जाती है क्योंकि जिस प्रकार काजल की कोठरी में प्रवेश कर जाने पर हम कितना भी उपाय करें कितनी भी चालाकी करें, फिर भी काजल की काली कालिख हमें लगना ही लगना है इसलिए अपने मन को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का एक ही उपाय है कि हमें बुरी संगति नहीं करनी चाहिए।

23. रिक्त स्थानों को भरें–:

क) बुराई__________करके बैठती है

© JCERT not to be republished

ख) जिन बातों को हम—याद नहीं करना चाहते, वे बार—बार__________उठती है और बेधती है।

ग) बुरी संगति की__________से बचो।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10 से 20 शब्दों में दें—:

प्रश्न 24. कैसी बातें हमें जल्दी याद हो जाते हैं और कैसी बातें नहीं याद होते हैं?

प्रश्न 25. बुरी बातें सुनने से क्या होता है?

प्रश्न 26. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दें—:

1. हमें कैसे संकल्पों से भरना चाहिए?

क. बुरे विचारों से युक्त

ख उत्तम विचारों से युक्त

ग. दोष से युक्त

घ. कुविचार से युक्त

2. कैसे मित्र का चुनाव करना चाहिए?

क. कुसंस्कार से भरे हुए मित्र

ख. जो समय पर काम ना आए

ग. जो हमारे साथ थिएटर जाए

घ. जो हमें सही राह बताएं

3 . कुसंग का ज्वर भयानक क्यों होता है?

क. यह हमारे नीति का नाश करता है।

ख. यह हमारे सद्वृत्ति का नाश करता है।

ग. यह हमारी बुद्धि का नाश करता है।

घ. उपरोक्त सभी का नाश करता है।

© JCERT not to be republished

4. हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय क्या है?

क. बुरी संगति से बचना चाहिए।

ख. हमें बुरी संगति करना चाहिए।

ग. हमें अच्छी संगति से दूर रहना चाहिए।

घ. बुरी बातें याद रखना चाहिए।

5. अच्छी मित्रता कैसी होती है?

क. हमारे आनंद में शामिल ना हो।

ख. निरंतर हमें अवनति की ओर अग्रसर करती है।

ग. अच्छी मित्रता हमें सहारा देने वाले हाथ के समान है।

घ. हमारे कर्तव्य का बोध नही करा सके।

पाठ से प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. आप किस प्रकार कह सकते हैं कि मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर हमारे जीवन की सफलता निर्भर करती है?

उत्तर : दूसरों के साथ रहते रहते हम उनसे प्रभावित होने लगते हैं इसके साथ ही उनके आचार–विचार, रहन–सहन, व्यवहार सभी बातों का प्रभाव हमारे ऊपर पड़ने लगता है, दूसरों की बातों को हम जल्दी ग्रहण कर लेते हैं और यदि हमारी प्रकृति अपरिपक्व हो तो हम बिना सोचे समझे, बिना विचार किए सामने वाले के विचार और व्यवहार को जल्दी ग्रहण कर लेते हैं इसका परिणाम अच्छा या बुरा दोनों हो सकता है अच्छी प्रवृत्ति और प्रभाव हमें देवता के समान और बुरी प्रवृत्ति और प्रभाव हमें दानव बना सकती है इसलिए हम कह सकते हैं कि मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर हमारे जीवन की सफलता निर्भर करती है।

प्रश्न 2. विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : मित्र के चुनाव में हमें सावधान होकर विवेक से काम लेना चाहिए उसके गुण दोष को परख लेना चाहिए क्योंकि मित्रता एक ऐसा साधन है जिससे आत्म–शिक्षा का काम सरल हो जाता है, सही अथवा गलत मार्ग बतलाता है, हमें उत्तम संकल्प से दृढ़ करता है। दोषों और त्रुटियों से हमें बचाता है। हमारे सत्य, पवित्र और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करते हुए कुमार्ग पर चलने से मना करता है अतएव एक विश्वासपात्र मित्र मिल जाए तो विपरीत परिस्थितियों में वह हमारे जीवन की रक्षा करता है, इसलिए विश्वासपात्र मित्र जीवन की

© JCERT not to be republished

एक औषध है।

प्रश्न 3. मित्र का चुनाव करते समय हमें किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर : एक सच्चा मित्र हमें उच्च और महान कार्यों में सहायता प्रदान करता है, हमारे मन के बल को बढ़ाता है, हमें निराशा से निकालकर आशा से भरता है, साथ ही दृढ़निश्चयी और सत्य संकल्पी भी बनाता है। अतएव मित्र का चुनाव करते समय हमें विवेक से काम लेना चाहिए। क्योंकि तभी हम अपने मित्र के गुण दोष आचार व्यवहार विचार आदि को सही प्रकार से परख सकते हैं।

प्रश्न 4. सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की–सी निपुणता और परख होती है,अच्छी से अच्छी माता का–सा धैर्य और कोमलता होती है इस पंक्ति के आधार पर अच्छे मित्र की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : एक अच्छा विश्वासपात्र मित्र हमें अच्छे संकल्पों के प्रति दृढ़ रखता है हमारी त्रुटियों और दोषों से हमें बचाता है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार एक वैद्य सही परख करके निपुणता के साथ उपचार करता है एवं माता के समान धैर्य और कोमलता के समान हमें सत्य पवित्र और मर्यादा के स्नेह से परिपूर्ण रखकर कुमार्ग पर जाने से रोकता है। इसलिए कहा गया है कि सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की–सी निपुणता और परख होती है और अच्छी से अच्छी माता का–सा धैर्य और कोमलता होती है।

प्रश्न 5. हमारा विवेक कुंठित न हो इसके लिए हमें क्या क्या प्रयास करना चाहिए?

उत्तर : हमें बुरी भावनाओं और विचारों से दूर रहना चाहिए, जिन बुरी बातों को हम याद नहीं करना चाहते हैं वह हमें बार–बार याद रहता है हमें पूरी चौकसी रखकर ऐसे साथी बनाने चाहिए जो अश्लील और पवित्र और फूहड़ बातें न करें क्योंकि एक बार जब हमारा विवेक कुंठित हो जाए तो भले बुरे की पहचान नहीं रह जाती है इसलिए अपने मन को उज्ज्वल और निष्कलंक रखते हुए हमें बुरी संगति से बचना चाहिए।

प्रश्न 6. लेखक ने युवा पुरुष के लिए कुसंगति और अच्छी संगति को किस–किस के समान माना है उसने ऐसा क्यों माना है?

उत्तर : लेखक ने युवा पुरुष के लिए कुसंगति को उसके पैरों में बंधी चक्की के सामान माना है, जो उसे दिन–रात अवनति के गड्ढे में गिराती है और अच्छी संगति सहारा देने वाली बाहों के सामान है, जो निरंतर उन्नति की ओर उठाती जाएगी।

भाषा संदर्भ

1. मित्र सच्चे पथ प्रदर्शक के समान होना चाहिए जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें।

ऊपर लिखे वाक्य में रेखांकित वाक्यांश के बदले एक शब्द 'विश्वासपात्र' का प्रयोग किया जा सकता है अर्थात 'जिस पर विश्वास किया जा सके'–विश्वासपात्र

© JCERT not to be republished

पाठ के आधार पर निम्नांकित वाक्यांशों के लिए एक एक शब्द लिखिए–

(क) जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो।

(ख) जो पका हुआ ना हो

(ग) जिसके चित्त में दृढ़ता हो।

(घ) रास्ता दिखाने वाला

(ङ) जो मन को अच्छा लगता हो

(च) हंसते हुए मुख वाला।

उत्तर – क. निरुत्साही

ख. अपरिपक्व

ग. दृढ़चित्त

घ. पथप्रदर्शक

ङ. मनभावन

च. हँसमुख

2. निम्नलिखित शब्दों को पढ़िए।

हेल–मेल, गुण–दोष, दो–चार, उथल–पुथल, हानि–लाभ, अपनी–अपनी, जान–पहचान

ये शब्द युग्म हैं। शब्द–युग्म पाँच प्रकार से बनाए जाते हैं–

(क) पुनरुक्ति द्वाराः कैसे–कैसे, ऐसे–ऐसे

विलोम द्वाराः छोटा–बड़ा, नया–पुराना

समानार्थक शब्दों द्वारा–दीन–हीन, दुख–दर्द

दो शब्दों में से एक निरर्थक शब्द के प्रयोग द्वाराः ठीक–ठाक, चाय–वाय

© JCERT not to be republished

दो निरर्थक शब्दों द्वारा–अंट–संट, गड्ड–मड्ड

पाठ में से ऐसे शब्द चुनिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–:

3. दो से अधिक पद (शब्द) मिलकर जब एक पद बनते हैं, उन्हें समस्त पद कहते हैं। यदि समस्त पद का पहला पद (पूर्व पद) अव्यय हो तथा संपूर्ण पद क्रिया–विशेषण या अव्यय बन जाए तो वहाँ अव्ययीभाव समास होता है पुनरुक्त शब्दों में समास होने पर भी अव्ययीभाव समास होता है।

प्रत्येक=प्रति (अव्यय) एक।

कुछ प्रमुख अव्यय जिनसे अव्ययीभाव समास बनता है, वे हैं– आ, भर, यथा, अति, प्रति।

आ – आमरण, आजीवन।

भर – भरपेट, हरदम।

यथा – यथाशक्ति, यथासंभव।

अति – अत्यावश्यक, अतिशीघ्र।

प्रति – प्रत्येक, प्रतिपक्ष।

पाठ में से प्रयुक्त अव्ययीभाव समास को ढूँढकर उनका विग्रह कीजिए।

4. शब्दकोश का उपयोग करते हुए निम्नलिखित शब्दों के अर्थ ढूँढकर लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

अपरिमार्जित – जो साफ सुथरा ना हो।

सत्यनिष्ठ – सत्य के प्रति आस्था

आत्मबल – आत्मा का बल

सवृत्ति – अच्छी आदत

बाल्यावस्था – बचपन की अवस्था

सहानुभूति – संवेदना, हमदर्दी

उद्‌गार – मन की भावना

© JCERT not to be republished

उज्ज्वल – निर्मल, स्वच्छ

स्वच्छंद – आजाद

मृदुल – कोमल

(नोटः वाक्य निर्माण स्वंय करें)

5. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए।

सब बातें अच्छी ही अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की–सी निपुणता और परख होती है, अच्छी–से–अच्छी माता का–सा धैर्य और कोमलता होती है।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'अच्छी–ही–अच्छी' और 'अच्छी–से–अच्छी' रूपों का प्रयोग हुआ है। 'अच्छ–ही–अच्छी' के पुनरुक्त रूप में 'ही' लगने से अच्छी की समग्रता का बोध होता है। 'अच्छी–से–अच्छी' में 'से' परसर्ग लगाने से तुलना का बोध होता है, जिसका अभिप्राय है, जो सबसे अच्छी हो। इस प्रकार के प्रयोगों को आप अच्छी तरह से समझिए और निम्नलिखित रूपों से वाक्य बनाइए–:

क. अधिक–ही–अधिक – बड़े बुजुर्गों के आशीर्वाद से सोहन ने जीवन में अधिक–ही–अधिक पाया है।

ख. अधिक–से–अधिक – सांस्कृतिक कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में लोगों को उपस्थित होने का आदेश हुआ।

बड़े–ही–बड़े – बड़ों की बात जब–बड़े–ही–बड़े नहीं मानेंगे तो छोटे कैसे मानेंगे?

बड़े से बड़े–बड़े–से–बड़े वीर भी मराठों की सेना के आगे नहीं टिक पा रहे थे।

व्याख्या से प्रश्नोत्तर

उत्तर 1. क. मित्रता, ख. गुप्त प्रभाव, ग. मित्रों के चुनाव

उत्तर 2. बाहरी संसार में हमें सबसे अधिक कठिनाई मित्र के चुनाव में होती है।

उत्तर 3: हमारा मन कोमल और हमारे संस्कार ग्रहण करने की होती है साथ ही साथ हमारे भाव परिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व होने के कारण संगति का गुप्त प्रभाव हमारे ऊपर पड़ जाता है।

उत्तर 4: मित्रों के चुनाव की उपयोगिता पर जीवन की सफलता निर्भर होती है क्योंकि अच्छे अच्छी संगति हमारे अंदर अच्छे गुणों का समावेश और कुसंगति से हमारे गुणों का ह्रास होता है।

© JCERT not to be republished

उत्तर 5: क. विश्वासपात्र, ख. औषध, ग. गुण–दोष

उत्तर 6: मित्रों का चुनाव करते समय हमें विवेक से काम लेना चाहिए क्योंकि तभी हम अपने मित्र के गुण–दोष, आचार–व्यवहार, विचार आदि को सही प्रकार से परख सकते हैं।

उत्तर 7: मित्रता एक ऐसा साधन है जिससे यदि विश्वासपात्र मित्र मिल जाए तो आत्म–शिक्षण का कार्य बहुत सुगम हो जाता है, विपरीत परिस्थितियों में हमारे जीवन की रक्षा होती है।

उत्तर 8: उत्तम वैद्‌य

उत्तर 9: हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे। दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे जब हम कुमार्ग के पथ पर पैर रखेंगे तब हमें सचेत करेंगे और जब हम हतोत्साहित होंगे तो हमें उत्साहित करेंगे।

उत्तर 10: सच्ची मित्रता में अच्छे वैद्य की–सी निपुणता और परख होती है साथ ही साथ अच्छी से अच्छी माता का–सा धैर्य और कोमलता होती है।

उत्तर 11: क. छात्रावस्था, ख. मग्न

उत्तर 12: बच्चों की मित्रता आनंद मग्न करने वाली, अपार विश्वास, मधुरता और एक दूसरे के प्रति प्रेम से भरी होती है, जिसमें वर्तमान आनंद में डूबा हुआ एवं भविष्य नवीन कल्पना से भरी हुई होती है। जल्दी एक दूसरे से नाराज होना और मान भी जाना मित्रता का एक भाग होता है।

उत्तर 13: क. सहपाठी की मित्रता, ख. दृढ़, शांत, ग. मित्र

उत्तर 14: सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति इन दो–चार बातें देखकर मित्रता की जाती है।

उत्तर 15: मित्रों के बीच ऐसी सहानुभूति होनी चाहिए जिससे एक के हानि–लाभ को दूसरा अपना हानि लाभ समझे मित्र को सच्चे पथ प्रदर्शक के समान होना चाहिए जिस पर हम पूरा विश्वास कर सके अतएव मित्र को भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति पात्र बना सके।

उत्तर 16: दृढ़–निश्चयी और सत्य संकल्पी

उत्तर 17: एक सच्चे मित्र का यह कर्तव्य है कि वह अपने मित्र के उच्च और महान कार्यों में सहायता प्रदान करें, मन के बल को बढ़ाएँ, उसे निराशा से निकालकर उसकी सहायता इस प्रकार करें कि वह अपने सामर्थ्य से बाहर भी काम कर सकता है।

© JCERT not to be republished

उत्तर 18: जो शुद्ध मन से, मृदुल, पुरुषार्थी, श्रेष्ठ और सत्य निष्ठ हो, जिनके भरोसे हम अपने को छोड़ सके, उनसे किसी प्रकार की धोखेबाजी नहीं मिलेगी, ऐसे मित्र पर हम विश्वास कर सकते हैं।

उत्तर 19: क. कुसंग का ज्वर, ख. खोने के लिए, ग. ढाढ़स

उत्तर 20: जो मित्र न कोई बुद्धिमानी या विनोद की बातचीत करें, न अच्छी बातें बतलाए, न हमारे प्रति सहानुभूति रखें, न ढाढ़स बँधा सके, न हमारे आनंद में शामिल हो और न हमारे कर्तव्य का बोध करा सके, ऐसे मित्रों से हमें दूर रहना चाहिए।

उत्तर 21: आज आसानी से ऐसे युवा मित्र मिल जाते हैं जो साथ थिएटर देखने, नाच रंग में जाने, सैर सपाटा करने भोजन का निमंत्रण स्वीकार करने वाले हो।

उत्तर 22: कुसंगति का ज्वर (बुखार) सबसे भयानक है यह केवल हमारे नीति–सिद्धांत का ही नाश नहीं करती बल्कि हमारी सद्बुद्धि का भी विनाश कर देती है। दिन–रात अवनति के मार्ग पर ले जाती है।

उत्तर 23: क. अटल भाव धारण, ख. हृदय में, ग. छूत

उत्तर 24: भद्दे और फूहड़ गीत हमें जितनी जल्दी याद होते हैं इतनी जल्दी अच्छी वह गंभीर बातें नहीं, लड़कपन में कहीं से बुरी कहावत यदि हमने सुना है तो लाख चेष्टा करने के बावजूद वह नहीं हटता है, जिन भावनाओं से हम दूर रहना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद नहीं करना चाहते हैं, वह हमें बार–बार याद रहता है।

उत्तर 25: बुरी बातें सुनने से हमारा विवेक कुंठित हो जाता है,भले बुरे की पहचान नहीं रह जाती है। बुरी बात अच्छी लगने लगती है और हम इसके अभ्यस्त होते–होते उनमें ना जाने कब फँस कर रह जाते हैं पता ही नहीं चलता इसलिए ऐसी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

उत्तर 26: वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के

उत्तर:– 1. ख, 2. घ, 3. घ, 4. क, 5. ग

1 (ख) – उत्तम विचारों के युक्त।

2 (घ) – जो हमें सही राह बताएँ।

3. (घ) – उपरोक्त सभी का नाथ करता है।

4. (क) – बुरी संगति से बचना चाहिए।

5. (ग) – अच्छी मित्रता हमें सहारा देने वाले हाथ के समान है।

© JCERT not to be republished